आज का पुरुषार्थ, 12 May 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" मैं डबल लाइट हूँ .. परम पवित्र हूँ .. मेरे मस्तक से .. अंग-अंग से दिव्य प्रकाश बिखर रहा है "*

हमारा **शिवबाबा** से बहुत प्यार है। उसकी आज्ञाओं से बहुत प्यार है। ब्रह्मा बाबा से भी बहुत प्यार है। और हमारे जीवनकाल, **लक्ष्य** भी बहुत महान है।

अष्टरतन यदि आप बनना चाहते है तो **मन** पर सम्पूर्ण controlling power हो। स्टाप कहा तो स्टाप हो गया। एक संकल्प भी इधर-उधर न जाये। अपने स्वरूप में सहज स्थिति हो जाये।

यह है सेकण्ड में **अशरीरी** होना। ऐसे पावरफूल आत्मायें ही अष्टरतन बनती है। हमें ब्रह्मा बाबा से प्यार है तो उनके डबल लाइट स्थिति से, **फ़रिश्ता स्वरुप स्थिति** से भी बहुत प्यार होना चाहिए।

हम संकल्प करें कि ... " **हमें सम्पूर्ण फ़रिश्ता बनना है** " .... और इसकी बहुत अच्छी प्रैक्टिस करे कि ... अपना ही फ़रिश्ता स्वरुप अपने सामने देखे, थोड़ी दूरी पर ... " जैसे मैं ही अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ते स्वरुप में सामने खड़ा हूँ "

" **बहुत डिवाइन स्वरुप** .. अंग-अंग से प्रकाश फ़ैल रहा है .. मस्तक में दिव्य ज्योति चमक रही है "

और फिर ... " *मेरा ही फ़रिश्ता स्वरुप मेरी ओर बढ़ता है और मेरे इस देह में समा जाता है .. मैं हो गया फ़रिश्ता*"

अभ्यास करे ... " *मेरा यह फ़रिश्ता स्वरुप बाहर निकलकर सामने की ओर जा रहा है .. मैं डाबल लाइट फ़रिश्ता हूँ*"

फ़रिश्ते स्वरुप की स्थिति बहुत ही सुन्दर है। इसी स्थिति के द्वारा विनाश काल में हम बहुत अच्छे अभ्यास और अनुभव करेंगे।

हम सभी को सहारे का अनुभव करायेंगे, सहयोग का अनुभव करायेंगे। उन्हें बल मिलेगा कि ... " हमारे इष्ट देव हमारे साथ है .. डरने की कोई बात नहीं "

तो बार-बार फ़रिश्ते स्वरुप का अभ्यास करे और दो बातों की प्रैक्टिस करें ... एक तो डबल लाइट रहें और साथ में अपने पवित्रता को आगे बढ़ाते चले।

क्योंकि फ़रिश्ते सम्पूर्ण पवित्र होते है। फ़रिश्ते निर्भय होते है, फ़रिश्ते सबके होते है, फ़रिश्ते मैसेंजर होते है। वह बहुत शक्तिशाली होते है। उनके अंग-अंग से निरंतर प्रकाश फैलता रहता है।

वह बाबा के बहुत समीप होते है। जैसे जब चाहे बाबा से संदेश ले आये .. वो ऐसा अनुभव कर सकते है।

हम केवल लक्ष्य बनाये ... " **हमें फ़रिश्ता बनना है** "

तो हम डबल लाइट बनेंगे या इस स्वमान में स्थित हो जाये कि ...

" **मैं फ़रिश्ता हूँ .. डाबल लाइट हूँ** .. कोई भी बात मुझे बोझिल कर नही सकती .. कोई भी बात मुझे बांध नहीं सकती .. मेरे पैर धरती को टच नहीं कर सकते ..

इस धरती के किसी भी आकर्षण में मेरे पैर बंध नहीं सकते .. मैं तो उड़ता हुआ स्वतन्त्र पंछी हूँ .. संसार का कोई भी माया, वा आकर्षण, वा बंधन मुझे उड़ने से रोक नहीं सकता "

ऐसे संकल्प करेंगे। हमें यह नहीं भूलना है कि हमारे संकल्प ही हमारी स्थिति का निर्माण करती है। जितने सुन्दर संकल्प हमारे मन में होते है, हम स्मृति-स्वरुप बनते जाते है। और हमारी स्थिति वैसे ही श्रेष्ठ होती जाती है।

तो आज सारा दिन हम फ़रिश्ता बनकर इस संसार में विचरण करेंगे। हम फ़रिश्ता बनकर दुसरों को सकाश देंगे। हम फ़रिश्ते स्वरुप में रहकर ही कर्म करेंगे।

तो बार-बार यह अभ्यास करेंगे ...

" मेरी यह देह प्रकाश की देह है .. और इसकी अंग-अंग से रंग-बिरंगी किरणें फ़ैल रही है .. और मैं चमकती हुई दिव्य ज्योति मस्तक सिंहासन पर विराजमान हूँ .. मैं चलता-फिरता फ़रिश्ता हूँ .. और मेरे सामने मेरा सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरुप खड़ा है .. और परमधाम से बाबा की किरणें मुझ पर पड़ रही है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org